क्या बाइबिल ईश्वरीय ग्रंथ है ?

—डॉ. के. वी. पालीवाल

''बाइबिल का हर एक पवित्र शास्त्र ईश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।'' (*2 टिमोथी 3 : 16*)

बाइबिल ईसाइयों का मुख्य धर्म ग्रंथ है जो कि भारत जैसे बहुधर्मी देश के लोगों के, न केवल ईसाइयों परन्तु गैर-ईसाइयों की जीवन पद्धति को भी अत्यंत प्रभावित करता है। दो हजार वर्ष पुराने ईसाई मत के सैकड़ों सम्प्रदाय हैं और इन सम्प्रदायों के पादरी और उपदेशक बाइबिल में विद्यमान विसंगतियों, अनर्गल विचारों और परस्पर विरोधाभासों की मनमानी व्याख्या करके इसकी विशेषताएं दिखाते हैं ताकि वे बाइबिल की असलियत से अपरिचित सीधे-सादे, अनपढ़, जनजातीय, बनवासी और गरीब सिख, जैन, बौद्ध, आदि हिन्दुओं को बहला फुसलाकर ईसाइयत में धर्मान्तरित कर सकें।

ईसाई पादरियों का दावा है कि बाइबिल ईश्वरीय ग्रंथ है। यह ईश्वर-प्रेरित एवं भ्रम रहित पुस्तक है। परन्तु आज के विद्वानों के सामने बाइबिल एक खुली किताब है जिसका कि विश्व भर के निष्पक्ष विद्वानों ने, गम्भीर अध्ययन करके, बाइबिल के सच्चे स्वरूप को उजागर किया है। यहाँ हम केवल बाइबिल की उत्पत्ति यानी बाइबिल वर्तमान स्वरूप में कैसे आई इसी विषय पर विचार करेंगे ताकि बाइबिल के ईश्वरीय होने की सच्चाई सामने आ सके।

बाइबिल क्या है?

बाइबिल शब्द ग्रीक भाषा के 'बिबलिया' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'किताब'। और 'टेस्टामेंट' का अर्थ है 'समझौता' या 'प्रतिज्ञा पत्र' यानी ईश्वर और मनुष्य के बीच का समझौता। बाइबिल आधुनिक पुस्तिकों की तरह एक विषय की लगातार पुस्तक नहीं है, बल्कि यह दो भागों—एक ओल्ड टेस्टामेंट (पूर्व-विधान) और दूसरा न्यू टेस्टामेंट (नव विधान-चैम्बर्स इंगलिश हिन्दी डिक्शनरी) से मिलकर बनी है; तथा ओल्ड टेस्टामेंट भी उन्तालीस पुस्तकों. और न्यू टेस्टामेंट सत्ताईस पुस्तकों से मिलकर बनी है। इस तरह सम्पूर्ण बाइबिल छियासठ पुस्तकों का संग्रह मात्र है।

बाइबिल की रचना कैसे हुई?

बाइबिल किसी एक व्यक्ति ने नहीं लिखी है। इसकी विभिन्न पुस्तकों को, विभिन्न लेखकों ने, विभिन्न कालों में. विभिन्न स्थानों पर बैठकर लिखा है। ओल्ड

टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट की इन सभी पुस्तकों एवं लेखकों का नाम, रचना स्थान और रचना काल क्रमशः तालिका 1 और 2 दिया गया है।

तालिका 1. ओल्ड-टेस्टामेंट की पुस्तकों का रचना सम्बंधी विवरण

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक	रचना स्थान	रचना काल (बी. सी. ई.)
1.	जिनेसिस	मोज़िज	एकान्त में	1513
2.	एक्सोडस	मोज़िज़	एकान्त में	1512
3.	लैवीटिकस	मोज़िज	एकान्त में	1512
4.	नम्बर्स	मोज़िज़	एकान्त और मोआब के मैदान में	1473
5.	ड्यूटरोनौमी	मोज़िज़	मोआब के मैदान में	
6.	जोशुआ	जोशुआ	कनान	सी. 1450
7.	जजिज़	सेम्युअल	इजराइल	सी. 1100
8.	रुथ	सेम्युअल	इज़राइल	सी. 1090
9.	प्रथम-सेम्युअल	सेम्युअल, गाड और नाथन	इज़राइल	सी. 1078
10.	द्वितीय सेम्युअल	गाड और नाथन	इजराइल	सी. 1040
11.	प्रथम किंग्स	जैरिमियाह	जूडाह और मिश्र	एकरोल 580
12.	द्वितीय किंग्स	जैरेमियाह	जूडाह और मिश्र	एकरोल 580
13.	प्रथम क्रोनिकिल्स	एज़रा	जेरुसलेम (?)	एक रोल सी. 460
14.	द्वितीय क्रोनिकिल्स	एज़रा	जेरुसलेम (?)	एक रोल सी. 460
15.	एज़रा	एज़रा	जेरुसलेम	सी. 460
16.	नेहेमियाह	नेहेमियाह	जेरुसलेम	ए. 443
17.	ऐस्थर	मोरडिकल	सुशान, एलाम	सी. 475
18.	जौब	मोज़िज़	एकान्त	सी. 1473
19.	पाल्मस	डैविड आदि	—	सी.460
20.	प्रोबर्स	सोलोमन, एगुर व लैमुअल	जेरुसलेम	सी. 717
21.	एल्कोसियास्टस	सोलोमन	जेरुसलेम	बी. 1000
22.	सोलोमन के गीत	सोलोमन	जेरुसलेम	सी. 1020
23.	इसैयाह	इसैयाह	जेरुसलेम	ए. 732
24.	ज़ेरेमियाह	जेरेमियाह	जूडाह-मिश्र	580
25.	लैमेन्टेशन्स	जेरेमियाह	जेरुसलेम के पास	607
26.	एज़ेकील	एज़ेकील	बैबीलोन	सी. 591

27.	डैनियल	डैनिअल	बैबीलोन	सी. 536
28.	होसिया	होसिया	समेरिया (जिला)	ए. 745
29.	जोएल	जोएल	जूडाह	सी. 820 (?)
30.	अमोस	अमोस	जूडाह	सी. 804
31.	ओबाडियाह	ओबाडियाह	—	सी. 607
32.	जोनाह	जोनाह	—	सी. 844
33.	मिकाह	मिकाह	जूडाह	वी. 717
34.	नाहूम	नाहूम	जूडाह	वी. 632
35.	हबाकुक	हबाकुक	जूडाह	सी. 628 (?)
36.	ज़ेफ़ानिआह	ज़ेफ़ानियाह	जूडाह	वी. 648
37.	हगैय्या	हगैय्या	जेरुसलेम (दुबारा बना)	520
38.	जेचारिआह	जेचारिआह	जेरुसलेम (दुबारा बना)	518
39.	मलाची	मलाची	जरुसलेम (दुबारा बना)	ए. 443

तालिका 2. न्यू टेस्टामेंट की पुस्तकों का रचना सम्बंधी विवरण

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक	रचना स्थान (सी. ई.)	रचना काल
1.	मैथ्यू	मैथ्यू	पैलेस्टिन	सी. 41
2.	मार्क	मार्क	रोम	सी. 60-65
3.	ल्यूक	लूक	कैसेरिया	सी. 56-58
4.	जोह्न	अपोस्टल जोह्न	एफ़ेसस या आसपास	सी. 98
5.	ऐक्ट्स	ल्यूक	रोम	सी. 61
6.	रोमन्स	पॉल	कौरिन्थ	सी. 56
7.	प्रथम कौरिंथियास	पॉल	एफ़ेसस	सी. 55
8.	द्वितीय कौरिंथियास	पॉल	मैसेडोनिया	सी. 55
9.	गैलेटियन्स	पॉल	कोरिन्थ या सीरियायी ऐन्टिऔच	सी. 50-52
10.	एफेसियंस	पॉल	रोम	सी. 60-61
11.	फिलीपियन्स	पॉल	रोम	सी. 60-61
12.	कोलोस्सियन्स	पॉल	रोम	सी. 60-61
13.	प्रथम थेस्सालोनियन्स	पॉल	कोरिंथ	सी. 50
14.	द्वितीय थेस्सालोनियन्स	पॉल	कोरिंथ	सी. 51

15. प्रथम टिमोथी	पॉल	मैसीडोनिया	सी. 61-64
16. द्वितीय टिमोथी	पॉल	रोम	सी. 65
17. टाइटस	पॉल	मैसीडोनिया (?)	सी. 61-64
18. फिलेमौन	पॉल	रोम	सी. 60-61
19. हिब्रूस	पॉल	रोम	सी. 61
20. जेम्स	जेम्स (जीसस का भाई)	जेरुसलेम	बी. 62
21. प्रथम पीटर	पीटर	बैबीलोन	सी. 62-64
22. द्वितीय पीटर	पीटर	बैबीलोन (?)	सी. 64
23. प्रथम जोह्न	एपोस्टल जोह्न	एफेसस, या आसपास	सी. 98
24. द्वितीय जोह्न	अपोस्टल जोह्न	एफेसस, या आसपास	सी. 98
25. तृतीय जोह्न	अपोस्टल जोह्न	एफेसस, या आसपास	सी. 98
26. जूडे	जूडे (जीजस का भाई)	पैलेस्टिन (?)	सी. 65
27. रिवीलेशन	अपोस्टल जोह्न	पाटमोस	सी. 96

नोट—कुछ पुस्तकों के लेखकों एवं उनके रचना स्थानों के नाम अनिश्चित हैं। अनेक पुस्तकों के रचना काल दी गई तिथियों के आसपास हैं। चिन्हों के अर्थ इस प्रकार हैं ए = बाद, बी-पहले और सी = सिरका या लगभग।

स्रोत—'न्यू वर्ल्ड ट्रान्सलेशन ऑफ दी होली स्क्रिपचर्स', वाच टावर बाइबिल एण्ड ट्रेक्ट सोसायटी ऑफ न्यू यौर्क इन्को. 1984, पृ. 1546-47

बाइबिल के लेखक

बाइबिल की पुस्तकों के ये लेखक राजा, सन्त, सिपाही, चरवाहे, किसान, मछुआरे आदि हैं। इनमें से कुछ ने एक से अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं। यहाँ समझने की बात यह है कि ईसाइयत के संस्थापक जीज़स ने अपने जीवन काल में न्यू टेस्टामेंट की कोई भी पुस्तक स्वयं नहीं लिखी है, और जिन लोगों ने भी उन्हें लिखा है, वे सभी जीज़स के शिष्य नहीं थे। बल्कि ये सभी पुस्तकें जीज़स की मृत्यु के लगभग पचास साल बाद लिखी गई थीं।

बाइबिल के विशेषज्ञों और बाइबिल के रूढ़िवादी विद्वानों के बीच बाइबिल के लेखकों के विषय में भारी मतभेद रहा है तथा बाइबिल के रूढ़िवादी विद्वानों ने '*बिब्लीकल क्रिटीसिज़्म*' नामक पुस्तक प्रकाशित की है और निष्कर्ष निकाला है कि "*ऐतिहासिक साहित्य का अध्ययन सैम्युअल, किंग्स और क्रॉनोकिल्स आदि पुस्तकों के अज्ञात लेखकों के नाम का पता लगाने में सफल नहीं रहा है और इन पुस्तकों के लेखन तिथियों का प्रश्न*

भी सन्तोषजनक ढंग से हल नहीं किया जा सका है :" (पृ. 41) पुनः 116 पृष्ठ पर *कहा गया है कि "वास्तव में न्यूटेस्टामेंट के किसी प्रकार के भी समीक्षात्मक अध्ययन में, इसके लेखकों की पृष्ठ भूमि के समर्थन में, स्वयं टेस्टामेंट के बाहर, किसी ईसाई और गैर-ईसाई ऐतिहासिक और साहित्यिक प्रमाण का अभाव, एक मुख्य कारण रहा है।"* और बाइबिल के ईमानदार विशेषज्ञ इस कथन की सच्चाई को स्वीकारते हैं कि बाइबिल के लेखक संदेहास्पद है जिसके लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

रचना स्थान—ये पुस्तकें जेरुसलेम, बेबीलोन, मिश्र, रोम, मैसीडोनिया, कौरिंथ आदि विभिन्न स्थानों पर लिखी गई थी। मोज़िज ने अरेबिया के रेगिस्तान से लिखना प्रारम्भ किया तथा जोह्न ने पाटमोस के द्वीप में अपनी पुस्तकें लिखीं। इनमें से कुछ महलों में, तो कुछ तम्बुओं और जेलों में लिखी गई हैं। (*डॉ. उमेश पत्री-प्रोबलम्बस इन पैराडाइज़ पृ. 2)*

रचना काल—इन तालिकाओं से स्पष्ट है कि ओल्ड टेस्टामेंट की पुस्तकें ईसा से 500 से लेकर 1500 वर्ष पहले यानी आज से 2500 से 3500 वर्ष पहले लिखीं गईं तथा न्यू टेस्टामेंट की पुस्तकें जीजस की मृत्यु के 50 से 100 वर्ष बाद लिखी गईं थीं।

बाइबिल की पुस्तकों के मुख्य वर्ग

बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेंट की पुस्तकें तीन प्रकार की हैं : तोराह (5), प्रोफेट्स (21) और राइटिंग (13) तथा न्यूटेस्टामेंट की 27 पुस्तकों में गौस्पिल, (4), एक्ट (1), सेन्टपॉल के पत्र (14), कैथोलिकों के पत्र (7) और एक जोह्न का रिवीलेशन हैं, जैसाकि नीचे दिए चित्र में दिखाया गया है।

बाइबिल का स्वरूप

ओल्ड टेस्टामेंट ↓ | न्यू टेस्टामेंट ↓

तोराह	प्रोफेट्स	राइटिंग	गोस्पेल	एक्ट्स	पॉल के पत्र	कैथोलिक पत्र	रिवीलेशन
(5)	(21)	(13)	(4)	(1)	(14)	(7)	(1)

यहाँ यह बताना उपयोगी होगा कि ईसाइयत का संस्थापक जीजस क्राइस्ट एक यहूदी था। वह यहूदी की भांति जिया, और यहूदी के रूप में ही मरा। उसने अपने जीवन काल में ईसाइयत स्थापित नहीं की थी। बाद के लोगों ने, मुख्यतः सेन्ट पॉल आदि ने, ईसाइयत का वर्तमान स्वरूप दिया। वास्तव में ईसाइयत का प्रारम्भ चौथी शताब्दी में रोम के राजा कोंस्टेन्टनिपोल के बाद विधिवत प्रारम्भ हुआ। मगर यहूदी रब्बी और प्रचारक

ओल्ड टेस्टामेंट को अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं, पर न्यूटेस्टामेंट को नहीं; तथा ईसाई न्यू टेस्टामेंट पर ही बल देते हैं। परन्तु वे ओल्ड टेस्टामेंट को नकारते नहीं हैं क्योंकि इसमें मसीहा जीज़स के प्रगट होने की भविष्यवाणी के संकेत हैं। साथ ही ईसाइयों की यूहदियों से जन्मजात शत्रुता है क्योंकि उनका विश्वास है कि रोम के प्रशासक द्वारा जीज़स को सूली पर चढ़ाए जाने की सजा यहूदियों के आरोपों के कारण ही थी।

बाइबिल के विषय

ओल्ड और न्यू दोनों ही टेस्टामेंटो की विषय सामिग्री में विभिन्न कालों और विभिन्न परिस्थितियों में लिखे जाने के कारण, इनमें व्यापक अन्तर है। ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों यानी ईश्वर के चुने हुए लोगों के इतिहास, संघर्ष व अन्य सामाजिक राजनैतिक व धार्मिक आस्थाओं का वर्णन है। उनका ईश्वर यहोवा और पैगम्बर मोज़िज है, तो न्यू टेस्टामेंट मुख्यतया 'ईश्वर पुत्र' जीज़स क्राइस्ट की जीवनी, उनके उपदेशों और ईसाइयत के प्रारंभिक विकास के बारे में है। दोनों ही पैगम्बरवाद और रिवीलेशन (ईश्वरीय प्रगटीकरण या खुदाई इलहाम) को मानते हैं।

संक्षेप में, बाइबिल में, सृष्टि रचना, मानव इतिहास, गाथावाद, चमत्कार, दर्शन, भविष्यवाणियां, दृष्टान्त, सुन्दर-असुन्दर, नैतिक-अनैतिक वचनों, विसंगतियों और मानवीय मूल्यों का समावेश है। बाइबिल की पुस्तकें मानव कृत एवं साम्राज्यवाद की महत्वांकाक्षा से ओतप्रोत होने के कारण विरोधाभासों एवं अवैज्ञानिक तथ्यों के साथ-साथ विरोधियों के प्रति क्रूर, हिंसा, दमन और अत्याचारों से भरपूर हैं और सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि साम्राज्य बढ़ाने के लिए किए जाने वाले ये धर्म-प्रेरित अत्याचार ईश्वर के नाम पर किए गए, और आज भी किए जा रहे हैं।

क्या दोनों टेस्टामेंटों में कोई मौलिक अन्तर है? इस प्रश्न का उत्तर *'क्रिश्चियन फन्डामेंटलिज्म'* के लेखक डी. डब्लू होपवेल इस प्रकार बतलाते है : "केवल तुलनात्मक दृष्टि से" न्यू टेस्टामेंट, ओल्ड टेस्टामेंट की अपेक्षा कम बर्बर है। इसका गॉड गैर-ईसाईयों और उन ईसाईयों को, भी जो कट्टरवादी ईसाईयों के आशानुकुलित मापदण्डों पर खरे नहीं उतरते हैं, को पीड़ित करने में अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव करता हैं......क्योंकि ओल्ड टेस्टामेंट की तरह, न्यू टेस्टामेंट भी मतान्धों द्वारा लिखित, मतान्धता को प्रेरित करने के लिए, मुख्यतया एक मतान्धता पूर्ण पुस्तक है। वास्तव में न्यू टेस्टामेंट, ओल्ड टेस्टामेंट का ही लगभग एक विस्तारण या अनुक्रम मात्र है......मेरा मत है कि दुर्भाग्य से, ओल्ड टेस्टामेंट की तरह न्यू टेस्टामेंट में भी "विवेक, सामान्य बुद्धि और करुणा त्याग' का समावेश है।" (*पृ. 74-75*)

मनुष्य कृत बाइबिल रचना का संक्षिप्त इतिहास

वैसे तो बाइबिल की समस्त पुस्तकों के चयन की प्रक्रिया और उनको प्रामाणिक रूप देने का एक लम्बा इतिहास है। ओल्ड टेस्टामेंट के विषय में स्टील एलेन अपनी पुस्तक

'बाइबिल, रिलीजन एण्ड मोरलिटी' नामक पुस्तक में लिखते हैं। *''ईसाइयों की यह आम धारणा है कि यहूदियों की धार्मिक पुस्तकें जीजस के जीवनकाल के सैकड़ों वर्ष पहले से ही लगभग इसी वर्तमान स्वरूप में ही विद्यमान थीं। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। हालांकि यहूदी बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेंट) की सभी पुस्तकों की रचना, ईसाइयत के काल खंड से पहले हुई थीं परन्तु उनको किसी एक रूप में संग्रह करके उन्हें धार्मिक प्रामाणिकता नहीं दी गई थी यानी कि उन्हें किसी प्रकार से विधिवत् धार्मिक कानून का अंग नहीं माना गया था जो कि 390 एडी में यवनेह की काउंसिल में निर्णय लेकर उन्हें वैधानिक मान्यता प्रदान की गई। ..... ये निर्णय भी पूरी तरह से उसी प्रकार के थे जैसे कि विभिन्न ईसाई काउंसिलों में खुली बहस व कमेटी द्वारा तथा क्षत-विक्षत करके या आदान-प्रदान एवं छूट' देकर या आम सहमति से किए गए थे''* (पृ. 332-333)

न्यूटेस्टामेंट के बारे में भी यह कहना उचित होगा कि जीज़स क्राइस्ट ने अपने जीवन काल में न ईसाइयत नामक मत को स्थापित किया था, और न उन्होंने अपनी शिक्षाओं को मानव समाज के कल्याण के लिए संग्रह करके सम्पादित कर उसे किसी पुस्तक का रूप दिया था। आज न्यू टेस्टामेंट में जीज़स का जो स्वरूप विद्यमान है, उसे सेंट पॉल सहित जीज़स के अनेक अनुयायियों ने जीजस के 50 और इससे अधिक वर्षों बाद संग्रह किया था। अत: न्यू टेस्टामेंट नामक ग्रंथ जीजस क्राइस्ट के जीवन काल और उसके पचास वर्ष तक भी विद्यमान नहीं था।

जीज़स के देहान्त के बाद उनके अनुयायियों ने जीज़स के नाम पर अनेक ग्रंथों की रचना कर उनका प्रचार-प्रसार किया। ऐसा प्रचार प्रारंभिक 300 वर्षों तक चलता रहा। इस काल खंड में ऐसा कोई धार्मिक संगठन भी नहीं था जो इन विभिन्न पुस्तकों को संग्रह और जाँच परख करके उन पर प्रामाणिकता की मुहर लगाता। मौरिस बुकेले अपनी पुस्तक ''*दी बाइबिल, दी कुरान* एण्ड साइंस'' (पृ. 77) में लिखते हैं कि '*ईसाइयत के प्रारम्भिक वर्षों में अनेक पुस्तकों का प्रचलन था।*' इस प्रकार विभिन्न लोगों द्वारा लिखी गई ये पुस्तकें 'दैवी' या 'ईश्वरीय' नहीं थी। एल. गार्डनर ने अपनी पुस्तक '*ब्लड लाइन ऑफ दी होली ग्रेल*' (पृ. 50) में लिखा है कि '*न्यूटेस्टामेंट के चारों गॉस्पिलों और अन्य पुस्तकों के चयन की प्रक्रिया अलेक्जेंड्रिया के बिशप एथेनासियस ने 367 एडी में प्रारम्भ की, और मैथ्यू, मार्क, लूक और जोह्न नामक चारों गोस्पियों की वैधता को 1546 में ट्रेन्ट की काउंसिल में अन्तिम रूप में मान्यता प्रदान की गई।*'

न्यू टेस्टामेंट की उत्पत्ति के बारे में शूमेन गोल्डिंग ने अपनी पुस्तक ''*बाइबिल पोलिमिक्स*'' (पृ. 23) में लिखा है कि *''सबसे पहले तो न्यू टेस्टामेंट को जीज़स के किसी शिष्य या उनके समकालीन किसी अन्य विद्वान ने नहीं लिखा था..... जब 397 में चर्च के प्रमुख लोगों ने न्यू टेस्टामेंट को संग्रहीत किया तो उन्होंने उस समय व्याप्त उन सभी पुस्तकों को इकट्ठा किया जिन्हें वे पा सके और उनकी उन्होंने मन चाही व्यवस्था की। उन्होंने संग्रह की गई पुस्तकों में से कौन-सी पुस्तक ईश्वरीय होनी चाहिए और कौन-*

सी नहीं, इसका वोट के आधार पर फैसला करने का निर्णय लिया। उन्होंने अनेक पुस्तकों को अस्वीकृत कर दिया, कुछ को सन्देहजनक माना और जिन पुस्तकों को ईश्वरीय ग्रंथ होने के समर्थन में बहुमत का वोट दिया उन्हें विधि संगत व 'ईश्वरीय' ग्रंथ माना गया। यदि उन्होंने इससे भिन्न वोट दिया होता तो जिन पुस्तकों, जो लोग ईश्वरीय कहते है वे कुछ और ही होतीं। यानी ऐसी व्यवस्था में किसी एक का विश्वास दूसरों के वोट पर आधारित होता है।'' इसके अलावा *''जिन लोगों नें ये सभी निर्णय लिए उनके बारे में हम बहुत कम जानते हैं। वे सब अपना सामान्य नाम चर्च फादर्स बतलाते हैं और इस विषय में सामान्य ईसाईजन बस इतना ही जानता है..... यद्यपि बाद में अपने को ईसाई कहे जाने वाले लोगों के बीच इसकी न केवल सैद्धान्तिक विषयों के बारे में व्यापक प्रतिक्रिया हुई, बल्कि पूर्वीकृत पुस्तकों की प्रामाणिकता पर भी सवाल उठाए गए। 325 एडी में कॉस्टेंन्टिन, जो कि ईसाई धर्म में अदीक्षित एक पैगन था, ने इन समस्याओं का समाधान ढूढ़ने के लिए* नाइसिया की काउंसिल *बुलाई। यहाँ विवाद का मुख्य विषय यह था कि जिस देवता की वे पूजा करते थे, उसका स्वरूप क्या है और उनके निर्णयों के आधार पर, मनुष्य मात्र जीज़स को एक सदेह परमेश्वर बना दिया गया, सबाथ को शनिवार से रविवार में बदल दिया गया, पास ओवर (जीजस का आखिरी भोज) को ईस्टर में परिवर्तित कर दिया गया....और न्यू टेस्टामेंट को एक पवित्र पुस्तक की धार्मिक मान्यता दे दी गई।''*

उपरोक्त कथनों का सार यही है कि नाइसिया की काउंसिल में मनुष्य जीज़स क्राइस्ट को 'दैवी ईश्वर' बना दिया गया,; न्यूटेस्टामेंट को इसके बाद एक 'पवित्र पुस्तक' की 'धार्मिक मान्यता' प्रदान की गई.; न्यू टेस्टामेंट की वर्तमान सभी 27 पुस्तकों को ईसाई फादरों ने बहुमत के वोट द्वारा धार्मिक प्रामाणिकता प्रदान कर दी। सबाथ को शनिवार की जगह रविवार को मनाने और पास ओवर को ईस्टर पर मनाने को मान्यता प्रदान की गई तथा विभिन्न मनुष्यों द्वारा लिखी गईं न्यू टेस्टामेंट की पुस्तकों को 'ईश्वरीय' घोषित किया गया।

पाँच वोट से चुनी बाइबिल

यहाँ बाइबिल की 66 पुस्तकों को धार्मिक मान्यता देने के लिए जो क्रिया विधि अपनाई गई उसके विषय में रिचार्ड सिसोन अपनी पुस्तक *''आन्सरिंग क्रिश्चियनिटीज मोस्ट पज़लिंग क्वैशचंस* (खं. 1. पृ. 6) में इस प्रकार लिखते है : *''वास्तव में जीज़स के देहावसान के बाद 'ईश्वर प्रेरित' कही जाने वाली पुस्तकों की एक बड़ी बाढ़ सी आ गई....इनकी सच्चाई के बारे में व्यापक विरोधों के स्वर कई सदियों तक गूंजते रहे। अन्त में चौथी सदी में चर्च नेताओं के एक वर्ग ने काउंसिल बुलाई और इस विषय में वोट लिए गए। बाइबिल की जिन 66 पुस्तकों को स्वीकृत किया गया उन्हें, 563 की अपेक्षा 568 मिले।''* इस प्रकार 397 एडी. की उपरोक्त काउंसिल में 1131 चर्च नेताओं में से 568 ने वर्तमान 66 पुस्तकों के पक्ष में, और 563 ने विरोध में अथवा अन्य पुस्तकों के पक्ष में

वोट दिया जिन्हें कि रद्द कर दिया गया। **अत: यह बात सुस्पष्ट है कि 'ईश्वरीय' कही जाने वाली ये सभी स्वीकृत पुस्तकें मानवकृत और मानव वोटों द्वारा 'ईश्वर प्रेरित' या ईश्वरीय घोषित की गईं थीं।**

यदि उस सभा में विद्यमान चर्च के तीन और नेता अन्य पुस्तकों के पक्ष में वोट दे देते या इन 66 पुस्तकों को नक." देते तो आज ईसाई धर्म ग्रंथ बाइबिल की पुस्तकों का नाम व स्वरूप और उनकी शिक्षाओं का सन्देश भी सम्भवत: विभिन्न हो सकता था। मगर वह संदेश कितना भिन्न होता, कहा नहीं जा सकता है क्योंकि वे रद्द की गईं सभी पुस्तकें आज उपलब्ध नहीं है और हम यह भी निश्चित रूप से नहीं जानते हैं कि ये चर्च नेता, कौन थे ? पादरी, धार्मिक विद्वान या सभी तरह के ईसाई व्यक्ति। साथ ही रिचार्ड सिसौन यह भी लिखता है कि "*वास्तव में 373 एडी में हिपो की और 397* एडी. में कार्थेज़ की काउंसिल ने न्यू टेस्टामेंट की जिन 27 पुस्तकों को प्रामाणिक माना। ऐसा करते हुए उन्होंने इन पुस्तकों की प्रेरणाओं को मान्यता दी थी।"(*वही. पृ. 7*) इतना सब होते हुए भी चर्च आज तक भी यह नहीं जानती है कि इन चर्च फादरों ने किन-किन मापदण्डों के आधार पर इन 66 पुस्तकों को प्रामाणिकता प्रदान की थी, इसके अलावा कि यह कल्पना करने के कि वे ईश्वर प्रेरित हैं। जोश मैक्डोबैल अपनी पुस्तक "एवीडेन्स देट डिमान्ड्स ए वरडिक्ट" (पृ. 29) में लिखता है "**हम वास्तव में नहीं जानते कि प्रारम्भिक चर्च फादरों ने धर्म विधान सम्बंधी पुस्तकें चुनने के लिए क्या माप दण्ड अपनाए।**"

उपरोक्त विवरण एवं ऐतिहासिक प्रमाण बलपूर्वक इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वे पुस्तकें पहले 'प्रामाणिक धर्म शास्त्रीय' नहीं थीं जिन्हें कि तत्कालीन प्रभावशाली धार्मिक एवं राजनैतिक नेताओं ने वोट द्वारा उन्हें चर्च की प्रामाणिक धर्म शास्त्रीय पुस्तकें बना दिया। यदि उनमें से तीन और व्यक्ति किन्हीं अन्य बहिष्कृत पुस्तकों के पक्ष में वोट दे देते तो चुनी गई तथा 'कथित-ईश्वर प्रेरित' पुस्तकें कुछ और ही होती। अत: उस समय मौजूद 1131 व्यक्तियों की पारस्परिक संरचना एवं उनकी वैचारिकता ने, और विशेष कर उन 568 की मानसिकता ने जिन्होंने वर्तमान 66 पुस्तकों के पक्ष में वोट दिया, इन पुस्तकों को 'ईश्वर प्रेरित' एवं 'प्रामाणिक चर्च-विधान' निश्चित कराया। मेरा विचार है कि तत्कालीन रोम में सेन्ट पॉल का गुट प्रभावशाली था जिसने इन पुस्तकों के चयन में निर्णायक भूमिका निभाई। यह कथन इस तथ्य पर आधारित है कि 27 पुस्तकों में से आधी (14) तो सेन्टपॉल की ही लिखी हुई हैं। इसके अलावा लूक, मैथ्यू और मार्क सेन्ट पॉल के परिचित व मित्र थे। अत: बाइबिल में सेन्ट पॉल की प्रधानता है, हालांकि सेन्ट पॉल, न स्वयं जीज़स से कभी मिला, और न ही उसने जीज़स से बपतिस्मा ही लिया।

बहिष्कृत पुस्तकें

जैसाकि पहले कहा जा चुका है कि 397 एडी की कार्थेज़ काउंसिल में कुछ पुस्तकों को वोटिंग द्वारा, बाइबिल से बहिष्कृत कर दिया गया था, और इनमें से कुछ पुस्तकों के

संदर्भ हम ओल्ड टेस्टामेंट में पाते हैं जैसे कि 'बुक ऑफ दी बार ऑफ लाईंस' को हम नम्बर्स 21में, 'बुक ऑफ़ जाडोर' को जोशुआ 10 : 13 में व 'बुक ऑफ नाथन एण्ड गाड', को प्रथम क्रोनिकल्स में, और 'बुक ऑफ दी एक्ट्स ऑफ़ सोलोमन' को द्वितीय क्रोनोकिल्स में पाते हैं। इसके अलावा अनेक अन्य पुस्तकों को वर्तमान बाइबिल से सम्मिलित क्यों नहीं किया गया? आज कोई भी इन जैसी अनेक पुस्तकों के बारे में कुछ नहीं जानता हैं। आखिर उन्हें नाश होने के लिए क्यों छोड़ दिया गया? जब स्वीकृत की गईं पुस्तकों के मापदण्ड का आधार आज तक ज्ञात नहीं है तो इन बहिष्कृतों के कारणों का पता भला कैसे लग सकता है?

इसी प्रकार न्यू टेस्टामेंट में भी अनेक पुस्तकें गोस्पिलों के रूप में अस्वीकृत कर दी गईं। हिब्रूस नामक पुस्तक के अनुसार जुडास इस्कारियोट का गोस्पेल, 'पीटर का गोस्पेल', 'मार्सियोन' का गोस्पेल', 'मैथ्यिास का गोस्पेल', 'ईव का गोस्पेल' और 'फिलिप्स का गोस्पेल' तथा पीटर का 'एक्ट्स', पीटर का 'बुक्स ऑफ जजमेंट', 'हिम्स ऑफ क्राइस्ट', 'क्राइस्ट्स मैजिकल बुक' एवं 'जीजस लैटर्स टू पीटर एण्ड पॉल' आदि पुस्तकों के संदर्भ मिलते हैं। मगर इनमें से किसी भी पुस्तक को नहीं लिया गया और वे सभी उसी सभा भवन में ज्यों की त्यों पड़ी रह गईं क्योंकि उन मूल्यमान पुस्तकों के समर्थक तत्कालीन धार्मिक—राजनैतिक कारणों के फलस्वरूप चुनाव में हार गए थे।

इस संदर्भ में मौरिस बुकैले अपनी पुस्तक *'दी बाइबिल दी कुरान और सॉइंस'* (पृ. 78) में कहता है *''सम्भवतः एक सौ गोस्पिलों को दबा दिया गया था।''* फिर भी सात पुस्तकें, जिन्हें 'एपोक्राइफा' कहते हैं जो कि ईस्टर्न और्थोडोक्स कैथोलिक और अन्य कैथोलिक बाइबिल में सम्मिलित हैं। उनके नाम हैं—(1) टौबिट, (2) जूडिथ, (3) बिज़डम ऑफ़ सौलोमन, (4) सिराच, (5) बारुच, (6) प्रथम मैकाबीज़ और (7) द्वितीय मैकाबीज़,ईसाई जगत आज भी इस पर विभाजित है कि उन्हें धर्मशास्त्र एवं धर्म विधान माना जाए या नहीं।

जोश मैक्डोबैल कहता है कि'' *ये पुस्तकें ऐतिहासिक और भौगोलीय तथ्यों और काल निर्धारण में त्रुटियों से भरपूर हैं*'' (वही. पृ. 33)। इसी प्रकार ब्लेकलौक अपनी पुस्तक 'जीज़स मैन एण्ड मिथ' (पृ. 47) में लिखता है ''इन तथाकथित एपोक्राइफल गोस्पिलों में अत्यन्त असंगत कहानियां पाई जाती हैं।'' इसी विषय में डोनाल्ड स्ट्रवार्ट लिखता है *''एपोक्राइफाओं को धर्मशास्त्र स्वीकार न करने का मूल कारण यह है कि इन पुस्तकों के अन्दर ईश्वर-प्रेरित होने के कोई दावे नहीं मिलते हैं। ये उन धर्मशास्त्रों के विरुद्ध है जिनमें ईश्वरी प्रगटीकरण यानी रिवीलेशन के दावों के प्रमाण मिलते हैं''* (वहीं. 124) मगर यह तर्क निराधार, व्यर्थ और अमान्य हैं क्योंकि बाइबिल में विद्यमान 'बुक ऑफ़ एस्थर' में कहीं भी ईश्वर का उल्लेख नहीं है, फिर वह वहाँ क्यों है?

पुनः एपोक्राइफा के बारे में मौरिस बुकैले लिखता है ''ईसाइयत के प्रारम्भिक काल

में जीजस के सम्बंध में अनेक कृतियां प्रचलन में थीं परन्तु प्रामाणिकता के योग्य न होने के कारण उन्हें बाद में चालू न रखा जा सका और चर्च ने उन्हें गुप्त रखने का आदेश दिया। इसीलिए उनका नाम 'एपोक्राइफा' या 'गुह्य लेख'/ 'संदिग्ध लेखक रचना' पड़ा। इन कृतियों में से कुछ पाठ्य पुस्तकों को जो सामान्यतया लाभकारी सिद्ध हुई उन्हें भली भाँति सुरक्षित रखा गया.....इन कुछ एपोक्राफीय रचनाओं में काल्पनिक विवरण है जो कि लोकप्रिय कल्पनाओं की देन थी।'' वह यह भी लिखता है ''एपोक्राइफा के लेखक उन पदों को सन्तोष के साथ प्रस्तुत करते हैं जो कि वस्तुत: हास्यास्पद एवं बेतुके हैं। मगर इस प्रकार के बेतुके अनेक पद या लेखांश लगभग सभी गोस्पिलों में पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए मैथ्यू का जीजस की मृत्यु के अवसर पर की घटनाओं का काल्पनिक विवरण देखना पर्याप्त होगा। ईसाइयत के प्रारम्भिक काल की सभी रचनाओं में ऐसी गम्भीरता रहित लेखांशों को अक्सर देखा जा सकता है। मगर इस सत्य को स्वीकारने के लिए पाठक में पर्याप्त ईमानदारी होनी चाहिए।'' (*वही. पृ. 77*)

इस प्रकार यह आरोप लगाना कि 'एपोक्राइफ़ा' में ही बेतुकी बातें, मन भावन कल्पनाएं एवं अनुचित दावे आदि हैं, पूरी तरह निराधार है क्योंकि बाइबिल की अनेक पुस्तकों में भी 'एपोक्राइफ़ा' की तरह के अनेक बेतुके, अवैज्ञानिक, असत्य, अनैतिक, मनभावन एवं चमत्कारी कथनों की भरमार है।

वर्तमान बाइबिल की 66 पुस्तकों और एपोक्राइफ़ा के गम्भीर, निष्पक्ष परीक्षण एवं तुलनात्मक अध्ययन से यह सुस्पष्ट होता है कि दोनों ही प्रकार की पुस्तकों की विषय सामग्री एवं स्वरूप समान है। एपोक्राइफ़ा की सातों पुस्तकों को बहिष्कृत करने का मुख्य कारण तो यही था कि 397 एडी. की कार्थेज काउंसिल में एपोक्राइफा के समथर्कों का वोट संख्या बल कम था और उस समय की धार्मिक-राजनैतिक परिस्थितियां उसका मूल कारण था और ऐसा चर्च की प्रत्येक काउंसिल में बार-बार हुआ। एडवर्ड ल्बेयर अपनी पुस्तक ''एबिंगडन बाइबिल हैंडबुक'' (पृ. 35) में लिखता है कि *''382 में रोम की, 393 में हिप्पो की, 397 में कार्थेज की और पुन: 419 में कार्थेज की चर्च काउंसिलों में बार-बार न्यू टेस्टामेंट की वर्तमान पुस्तकों की सूची की ही पुष्टि की गई।''*

मुख्य निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण के निम्नलिखित निष्कर्ष मुख्य हैं—

(1) बाइबिल पुस्तकों की पुस्तक और एक में दो हैं।

(2) बाइबिल ओल्ड टेस्टामेंट की 39 और न्यू टेस्टामेंट की 27 पुस्तकों का संग्रहमात्र है।

(3) ओल्ड टेस्टामेंट की सभी पुस्तकें ईसा से 500 से 1500 वर्ष पहले, और न्यू टेस्टामेंट की पुस्तकें 50 से 100 एडी में विभिन्न लेखकों द्वारा, विभिन्न

परिस्थितियों में, विभिन्न स्थानों पर लिखी गईं। अतः इनमें पारस्परिक विरोधाभास होना स्वाभाविक है।

(4) चौथी सदी तक बाइबिल और ईसाइयत वर्तमान स्वरूप में नहीं थी तथा जीज़स के नाम पर समाज में अनेक पुस्तकें प्रचलित थीं।

(5) 397 एडी. में, कार्थेज़ की काउंसिल में, केवल पांच मतों के बहुमत (568/563) से बाइबिल की 66 पुस्तकें वोटिंग द्वारा स्वीकृत हुईं और तभी अनेक पुस्तकें रद्द भी कर दी गईं। परन्तु इस चयन प्रक्रिया के मापदण्ड क्या थे, आज तक किसी को पता नहीं चल सका है।

(6) एपोक्राइफ़ा के नाम से प्रसिद्ध सात बहिष्कृत पुस्तकें कुछ कैथोलिक सम्प्रदायों में प्रामाणिक मानी जाती हैं।

(7) न्यू टेस्टामेंट, जो कि मुख्यतया ईसाइयों का धर्मग्रंथ है, में सेन्ट पॉल एवं उसके साथियों की पुस्तकों की प्रधानता है।

(8) बाइबिल की पुस्तकों के कुछ लेखक अनिश्चित एवं विवादास्पद हैं।

(9) इस तरह बाइबिल विभिन्न मनुष्यों द्वारा, विभिन्न कालों में, विभिन्न स्थानों में, विभिन्न परिस्थितियों में लिखी गई 66 पुस्तकों का संग्रह मात्र है जिन्हें कि 397 एडी में 1131 लोगों ने पांच वोट के बहुमत के द्वारा चुनकर ईसाइयत का धर्मशास्त्र एवं धर्म विधान बनाया।

(10) वास्तव में बाइबिल ईश्वर के प्रगटीकरण (रिवीलेशन) द्वारा नहीं, बल्कि पूरी तरह मनुष्य कृत है। इसीलिए इसमें अनेक अवैज्ञानिक एवं दो हजार परस्पर विरोधी वचन हैं।

अतः बाइबिल (2 टिमोथी : 3: 16) का यह कहना कि "बाइबिल का हर एक पवित्र शास्त्र ईश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" पूरी तरह निराधार भ्रामक और असत्य है।

हिन्दू राइटर्स फोरम (रजि.)

129 बी., एम. आई. जी. राजौरी गार्डन नई दिल्ली-27, फोन न. 25115281/ (मो.) 9891775108

रुपये 4/-